तित्थयर

जैन भवन

वर्ष : २४ अंक : २
मई २०००

Received 5.6.2000
४७२६

ज्ञानी होने का सार यह है कि वह किसी भी प्राणी की हिंसा न करे।

Sethia Oil Industries Ltd.

Manufacturers of De-oiled Rice Bran, Mustard Deoiled Cakes, Neem deoiled Powder, Ground-nut De-oiled Cakes, Mahua deoiled cakes etc. And Solvent Extracted Rice Bran Oil, Neem Oil, Mustard Oil etc.

Plant
Post Box No. 5
Lucknow Road
Sitapur - 261001 (U.P.)
Ph: 42017/42397/42073
(05862)
Gram - Sethia - Sitapur
Fax : 42790 (05862)

Registered Office
143, Cotton Street
Cal-700 007
Ph: 2384329/
8471/5738
Gram - Sethia Meal

Executive Office
2, India Exchange Place
Calcutta - 700 001
Ph: 2201001/9146/5055
Telex : 217149 SOIN IN
FAX : 2200248 (033)

तित्थयर

श्रमण संस्कृति मूलक मासिक पत्रिका

वर्ष - २४ अंक - २, मई २०००

॥ जैन भवन ॥

संपादन

लता बोथरा

लेख, पुस्तक समीक्षा तथा पत्रिका से सम्बन्धित पत्र व्यवहार के लिये
पता - Editor : **Tithayar,** P-25, Kalakar Street, Calcutta-700 007

विज्ञापन तथा सदस्यता के लिये कृपया सम्पर्क करें –
Secretary, Jain Bhawan, P-25, Kalakar Street, Calcutta-700 007
Subscription for one year : Rs. 55.00, US$ 20.00,
for three year : Rs. 160.00, US $ 60.00,
Life Membership : India : Rs. 1000.00, Foreign : US$ 160.00

Published by Lata Bothra on behalf of Jain Bhawan from
P-25, Kalakar Street, Calcutta-700 007 Phone: 238 2655 and Printed by her
at Arunima Printing Works, 81, Simla Street
Calcutta-700 006 Phone: 241 1006

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	लेख		लेखक	पृ. सं
१.	श्रमण भगवान वर्द्धमान महावीर	-	श्रीमती लता बोथरा	५१
२.	प्राकृत कथा साहित्य	-	प्रो० माधव श्रीधर रणदिवे सतारा	६०
३.	रूद्रपल्लीय गच्छ के इतिहास पर संक्षिप्त प्रकाश	-	डॉ० शिवप्रसाद सिंह	६६
४.	मलयासुन्दरी			७४

आवरण चित्र–**श्री अष्टापद (कैलाश)**

Composed by :

Anupriya Printers, 6A, Baroda Thakur Lane, Calcutta-700 007, Ph. 232 6083

श्रमण भगवान महावीर

पूर्वानुवृत्ति

भगवान महावीर का जीवन चरित्र एवं उनके पूर्व भवों का वर्णन स्वयं में एक महत्वपूर्ण दर्शन के साथ एक ऐसी अनुभूति है जिसमें उतर कर मनुष्य अपने जीवन की पराकाष्ठा को प्राप्त कर सकता है। दूसरे शब्दों में हम कह सकते है कि एक पूरा का पूरा दर्शन महावीर के चरित्र में समाया हुआ है। यह एक आत्मा के परमात्मा बनने का दर्शन है। भगवान महावीर के कहीं ३३ और कहीं २७ भवों का वर्णन हैं। दिगम्बर परम्परा में प्रथम भव पुरुरवा भील का मिलता है। जबकि श्वेताम्बर परम्परा में नयसार का हैं। मरिचि के भव का वर्णन हमें दोनों परम्पराओं में प्राप्त होता है। मरिचि के जीव का विश्व भूति के रूप में जन्म दोनों परम्पराओं में मान्य हैं।

विश्वभूति :- राजगृह में विश्वनन्दी नाम का राजा था। उसकी रानी का नाम प्रियंगु था जिससे उनके एक लड़का था जिसका नाम विशाखनन्दी था। राजा के छोटे - भाई विशाखभूति के विश्वभूति नाम का पुत्र था। एक बार राजभवन के उद्यान में विश्वभूति अपने अन्तपुर के साथ सुख विहार कर रहा था कि उसी समय राजा के पुत्र विशाख नन्दी ने वहां प्रवेश करना चाहा तो प्रहरियों ने रोक दिया, क्यों कि राजकुल की मर्यादा के अनुसार जब तक प्रथम प्रविष्ट व्यक्ति बाहर नहीं आ जाये दूसरा बाग में प्रवेश नही कर सकता। यह देख रानी प्रियंगु की दासियों ने रानी को यह खबर दी जिसको सुन रानी की ईर्ष्याग्नि भड़क गयी और उसने राजा से कहा! राजा ने और कोई उपाय न देख कर एक योजना बनायी और युद्ध यात्रा उद्घोषित की। यह बात सुनते ही विश्वभूति उद्यान से बाहर आया और राजा को रोक कर स्वयं युद्ध यात्रा के लिये चल दिया। लेकिन जब युद्ध क्षेत्र में पहुँचा तो वहाँ ना कोई उपद्रव दिखा

और ना ही कोई युद्ध की हलचल अतः वह वापिस लौट आया। इधर विश्वभूति के उद्यान से निकलते ही विशाखनन्दी ने वहां अपना डेरा जमा दिया। विश्वभूति लौटने के बाद उद्यान में जाने लगे तो द्वारपालों ने उसे रोक कर कहा, कि कुमार विश्वनन्दी अपने अन्तपुर के साथ उद्यान में है। अब विश्वभूति को ज्ञात हुआ कि उनके साथ धोखा किया गया हैं। युद्ध की घोषणा वास्तव में उन्हें उद्यान से बाहर निकालने का षड्यन्त्र था। क्रोधित होकर उन्होंने द्वार पर स्थित एक कैथ के वृक्ष पर जोर से मुष्ठि प्रहार किया और कहा कि मैं इसी प्रकार तुम सबके सिर गिरा देता यदि मेरे मन में राजा के प्रति आदर नहीं होता। इस अपमान से चोट पाये विश्वभूति विरक्त हो घर से निकल गये और आर्य संभूत स्थविर के पास जाकर दीक्षा ले साधु बन गये। और विविध तप करते हुये देश विदेशों में विहार करने लगे। कालान्तर में विश्वभूति मथुरा गये। मासक्षपण की तपस्या की समाप्ति पर गोचरी के लिये नगर में निकले। उन्हीं दिनों कुमार विशाखनन्दी भी शादी करने मथुरा आया हुआ था। विश्वभूति को देख विशाखनन्दी के अनुचरों ने जब उसे बताया कि ये विश्वभूति हैं यह जानते ही विशाखनन्दी अत्यन्त क्रोधित हो गया। इसी समय एक नव प्रसूता गाय ने विश्वभूति को श्रृंग - प्रहार से गिरा दिया यह देख विशाखनन्दी हँसने लगा और बोला - कहाँ गया तेरा वह कैथ गिराने वाला बल। मुनि ने यह सुन कर गाय के श्रृंगों को पकड़ कर चक्र की तरह घुमा दिया, तथा मन में कहा कि इस तप संयम मुनि जीवन के फलस्वरूप मैं भविष्य में अपरिमित बलशाली बन इसको मार सकूँ।

इस प्रकार विश्वभूति ने अपने क्रोध का कभी पश्चाताप या प्रायश्चित नहीं किया। दिगम्बर परम्पराओं में भी इस भव के वर्णन कुछ थोड़े - बहुत परिवर्तन के साथ हमें मिलते है। इन वर्णनों से यह तो स्पष्ट होता ही है कि आत्मा कर्मों के बन्धन के कारण कभी तो स्वर्ग के सुखों को और कभी सातवे नरक के दुःखों को भोगती है। श्वेताम्बर परम्परा में नयसार के भव व दिगम्बर परम्परा में सिंह रूप में वह मुनि द्वारा संबोधन पाकर उसमें सम्यकत्व के भाव जगते है। और वही जीव अन्त में चरम तीर्थंकर महावीर के रूप में मुक्ति की अवस्था को प्राप्त करता है।

महाशुक्र देवलोक से निकल कर मरिचि का जीव पोतनपुर में त्रिपृष्ठ नामक वासुदेव हुआ। पोतनपुर के राजा प्रजापति, प्रतिवासुदेव अश्वग्रीव के माण्डलिक थे। उनके दो पुत्र थे, एक अचल और दूसरा त्रिपृष्ठ।

एक समय पोतनपुर की राजसभा में नाच - गान हो रहा था। राजा, दोनों राजकुमार और सभासदगण उसमें मस्त हो रहे थे। ठीक उसी समय अश्वग्रीव का दूत कार्यवश राजसभा में आया। राजा ने संयमपूर्वक दूत का स्वागत किया और जलसा बंद करवा कर उसका संदेश सुनने लगे।

रंग में भंग करनेवाले दूत पर कुमार बहुत बिगड़े। उन्होंने अपने आदमियों से कहा - जब यहाँ से दूत रवाना हो, हमें सूचित करना। सत्कारपूर्वक राजा से बिदा लेकर दूत रवाना हुआ। दोनों कुमारों को इसकी सूचना मिली और उन्होंने पीछे से जाकर दूत को पीटा। दूत के साथी उसे छोड़कर भाग गये।

प्रजापति को जब इस घटना का समाचार मिला तो उन्हें बड़ा रंज हुआ। दूत को वापस बुलवा कर दुगुना तिगुना पारितोषक दिया और कहा - "राजा से इस बात की शिकायत न करियेगा।" दूत मान गया, पर उसके साथी उसके पहले ही राजा के पास पहुँच कर और यह सारा वृतान्त निवेदन कर चुके थे।

दूत के अपमान की बात सुन कर अश्वग्रीव बहुत नाराज हुए और अपने दूत को तिरस्कृत करनेवाले दोनों राजपुत्रों को जान से मरवा डालने का उसने निश्चय कर लिया।

अश्वग्रीव को किसी भविष्यवेत्ता ने कह रक्खा था कि जो मनुष्य तुम्हारे चण्डमेघ दूत को पीटेगा और महाबलिष्ठ सिंह को मारेगा वही तुम्हारी मुत्यु का कारण होगा।

अश्वग्रीव ने दूसरा दूत भेज कर प्रजापति को कहलाया - तुम अमुक जगह जाकर हमारे शालिक्षेत्रों की रक्षा करों।

अपने पुत्रों को डांटते हुए प्रजापति ने कहा - यह तुमने अकाल-मृत्यु को जगाया हैं, क्योंकि हमारी बारी न होने पर भी हमें यह आज्ञा

मिली। अपने स्वामी की आज्ञा शिरोधार्य करके राजा सेना के साथ प्रयाण करने लगे तब राजकुमारों ने कहा - आप यहीं रहिये। इस काम के लिये तो हमीं जायेंगे। राजा के रोकने पर भी कुमार चले गये और मौके पर पहुँच कर कृषकों से पूछा - अन्य राजा लोग आकर यहाँ किस रीति से रक्षण करते हैं? लोगों ने कहा - जब तक खेतों में धान्य रहता है वे चतुरंगिनी सेना का घेरा डाल कर यहाँ रहते हैं और सिंह से लोगों की रक्षा करते हैं। त्रिपृष्ठ बोला - इतने समय तक कौन ठहरेगा? मुझे वह स्थान बता दो जहाँ सिंह रहता है। लोगों ने त्रिपृष्ठ को सिंहवाली गुफा दिखायी। कुमार रथमें बैठ कर गुफा के द्वार पर पहुँचा। लोगों ने दोनों तरफ से शोर किया जिससे चौंक कर सिंह गुफा के द्वार पर आया। कुमार ने सोचा यह तो पैदल है और मैं रथिक! यह विषम युद्ध है। ढाल तलवार के साथ वह रथ से उतर गया और फिर सोचने लगा - यह दंष्ट्रा - नखायुध है और मैं ढाल - तलवारधारी! यह भी ठीक नहीं। उसने ढाल तलवार भी छोड़ दिये। यह देखकर सिंह के क्रोध का पार न रहा। वह मुँह फाड़ कर कुमार पर झपटा। त्रिपृष्ठ ने पहले ही झपाटे में उसे दोनों जबड़ों से पकड़ा और जीर्ण वस्त्र की तरह फाड़ कर फेंक दिया। यह देख कर जनता ने जोरों का हर्षनाद किया।

लोगों ने सब हकीकत अश्वग्रीव के पास पहुँचा दी। वह बहुत रुष्ठ हुआ और दूत भेज कर प्रजापति को कहलाया कि अब तुम वृद्ध हो गये हो अतः सेवा में कुमारों को भेज दो। तुम्हें आने की जरूरत नहीं।

प्रजापति ने कहा - मैं खुद सेवा में आने के लिए तैयार हूँ।

अश्वग्रीव ने अतिकुद्ध होकर कहलाया - कुमारों को न भेजकर तूने हमारी आज्ञा का अनादर किया है अतः युद्ध के लिये तैयार हो जा।

कुमारों ने इस समय भी दूत को अपमानित कर निकाल दिया। अश्वग्रीव ने सम्पूर्ण सैन्य के साथ पोतनपुर पर चढ़ाई कर दी। त्रिपृष्ठ आदि भी अपनी सेना के साथ देश की सीमा पर जा डटे। दोनों सेनाओं में घमासान युद्ध हुआ और पहले ही दिन युद्धभूमि रक्तरंजित हो गई। निरापराध जीवों का यह संहार त्रिपृष्ठ को अच्छा न लगा। उसने अश्वग्रीव के पास दूत भेज कर कहलाया - कल से मैं और तुम दो ही

युद्ध में प्रवृत्त हों तो बहुत अच्छा। निरापराध जीवों को मरवाने से क्या लाभ है?

अश्वग्रीव ने त्रिपृष्ठ का प्रस्ताव मंजूर किया और रथों में बैठ कर अपने - अपने मोरचों से निकल कर दोनों परस्पर भिड़ गये। घंटों लड़े और खूब लड़े फिर भी मैदान दोनों का रहा। अश्वग्रीव ने देखा कि सब शस्त्र खत्म हो गये हैं फिर भी शत्रु मैदान में डटा हुआ है तो उसने अपने चक्रनामक अमोघास्त्र को सँभाला और उठा कर त्रिपृष्ठ पर जोरों से फेंका। अश्वग्रीव को विश्वास था कि इसके एक ही प्रहार से उसका काम पूरा हो जायगा। पर परिणाम विपरीत निकला। चक्र धार की तरफ से न लग कर तुम्बे की तरफ से त्रिपृष्ठ के वक्षस्थल पर गिरा। त्रिपृष्ठ ने उसे पकड़ लिया और उसी से अपने शत्रु का सिर उड़ा दिया। तत्काल आकाशवाणी हुई - त्रिपृष्ठ नामक प्रथम वासुदेव प्रकट हो गया।

सब राजाओं ने त्रिपृष्ठ की आधीनता स्वीकार की और आधे भारत वर्ष को अपने अधीन करके उसने वासुदेव का पद धारण किया।

चौरासी लाख वर्ष का आयुष्य पूरा करके त्रिपृष्ठ सातवीं नरकभूमि में तेंतीस सागरोपम की आयुष्य - स्थितिवाला नारकीय जीव हुआ।

भगवान महावीर का जीव तेईसवें भव में पश्चिम विदेह की राजधानी मूका नगरी में प्रियमित्र नामक चक्रवर्ती राजा हुआ। उसने संसार से विरक्त होकर प्रोष्ठिलाचार्य के पास प्रव्रज्या ली और चौरासी लाख वर्ष पूर्व का आयुष्य भोग कर चौबीसवें भव में वह महाशुक्रकल्प के सर्वार्थ नामक विमान में देव हुए।

उस काल में देवलोक की २० सागरोपन आयुष्य पूर्ण कर महाविजय पुष्पोत्त नामक महान विमान से श्रमण भगवान महावीर च्युत होकर कुंडपुर के राजा सिद्धार्थ की रानी क्षत्रियाणी त्रिशला की कुक्षि में आये। श्वेताम्बर परम्परानुसार पहले ब्राह्मणी देवनन्दा की कुक्षि में प्रविष्ट हुये तत्पश्चात् इन्द्र की आज्ञा से देव हरिणेगमेसी ने उन्हें क्षत्रियाणी त्रिशला के गर्भ में स्थापित किया और जो गर्भ त्रिशला के गर्भ में स्थित था। उसे देवनन्दी के गर्भ में स्थापित कर दिया। इस गर्भ परिवर्तन की घटना की मान्यता उस समय प्रचलित थी इसकी पुष्टि

मथुरा के कंकाली टीले से प्राप्त एक शिला खंड पर चित्रित गर्भ परिवर्तन की घटना से भी होती है। इस संदर्भ में भगवती सूत्र में गौतम स्वामी के एक प्रश्न के उत्तर में भगवान महावीर ने कहा - Hari negamesi takes out the embryo through the uteras and places it in the womb of another woman by touching the embryo with his own hands, and without causing any pain to the embryo, He does it with the greatest expertise.

Bhagawati Sutra S.5 U.4.

तीर्थंकरों की मातायें १४ स्वप्न देखती है। रानी त्रिशला ने भी ये १४ स्वप्न देखे थे। ये १४ स्वप्न इस प्रकार थेः- हाथी, बैल, सिंह, लक्ष्मी, पुष्पमाला, चन्द, सूर्य, ध्वजा; कलश, पद्य, सरोवर, क्षीर, समुद्र, देव विमान, रत्न राशि, और निर्धूम अग्नि। स्वप्न दर्शन के तुरन्त बाद त्रिशला जग पड़ी और सिद्धार्थ के पास जाकर स्वप्न दर्शन की बात कही। राजा ने अष्टांग महानिमित्त के सूत्र व अर्थ के पारंगत विविध शास्त्रों के ज्ञाता नैमितज्ञों को बुलाया और उनसे स्वप्नों का फलादेश पूछा। नैमितज्ञों ने कहा कि या तो किसी चक्रवर्ती का जन्म होंगा या तीनों लोकों का नायक श्रेष्ठ धर्म चक्र का परिवर्तन करने वाला तीर्थंकर होगा। ऐसा प्रतीत होता है कि स्वप्नों का फल बताने का उस समय प्रचलन रहा होगा।

जिस रात्रि से श्रमण भगवान ज्ञातकुल में संहरित हुये उसी समय से राज्य में हिरण्य, स्वर्ण, धान्य, बल, सेना, कोष्ठागार से राज की कीर्ति में वृद्धि होने से भगवान के माता पिता ने मन में विचारं किया कि जब हमारा यह पुत्र जन्म लेगा तो इस बालक के गुणानुसार इसका नाम वर्धमान रखेंगे।

महावीर के जन्म कुल के विषय में बौद्ध ग्रन्थ मौंन हैं सिवाय इसके कि कहीं - कहीं उन्हें नाथपुत्र, निर्गन्थ नाथ और निर्गन्थनाथपुत्र कह कर सम्बोधित किया गया है। Bulher के अनुसार जैन ग्रन्थों ने उन्हें ज्ञातपुत्र तथा णायपुत्र कहा है इससे निसन्देह यह प्रमाणित होता है कि महावीर क्षत्रियों के ज्ञातकुल में पैदा हुए थे। उनकी माता त्रिशला

वैशाली गणतन्त्र के गणपति चेटक राजा की बहन थी। वैशाली गणतन्त्र लिच्छिवियों और मल्लों से मिलकर बना था। जिनके प्रमुख चेटक के ६ लड़कियाँ थी जिनका विवाह उस समय के प्रमुख ६ राजाओं के साथ हुआ था जिनमें एक भगवान महावीर के बड़े भाई नन्दी वर्धन भी थे। इससे यह भी प्रमाणित होता है कि राजा सिद्धार्थ का प्रभुत्व तथा स्तर अत्यन्त उच्च कोटि का था। कनिंधम और प्रौ० डेविड के अनुसार वज्जी संग एक बहुत बड़ा संघ था जो आठ कुलो के परस्पर मेल से बना था जिसमें विदेह, लिच्छिवी, ज्ञात और वज्जी प्रमुख थे। विदेहों की राजधानी मिथिला थी जिनमें कुछ वैशाली में आकर बस गये थे। भगवान महावीर की माता त्रिशला इसी शाखा की थी। ज्ञात वंशियों का स्थान कुंडपुर या कुंडग्राम और कोल्लाग था जो वैशाली के उपस्थान थे लिच्छिवियों का प्रमुख क्षेत्र वैशाली था जो आज बिहार के मुज्जफरपुर का बसाढ़ क्षेत्र माना जाता है। वैशाली समस्त वज्जी संघ की राजधानी थी ।

इन्द्र ने जब अपने विपुल अवधि ज्ञोन से देखा कि श्रमण भगवान महावीर गर्भ रूप में आ गये हैं तो वह आनन्द विभोर हो अंजलिबद्ध हो भगवंान की इस प्रकार स्तुति करता हुआ कहता है।

अरिहंत भगवान को नमस्कार हो, धर्म की आदि करने वाले तीर्थ की स्थापना करने वाले, स्वतः सम्यक् बोध प्राप्त करने वाले, पुरुषों में उत्तम, पुरुषों में सिंह के समान, हाथियों में श्रेष्ठ पुण्डरीक कमल के समान, हाथियों में श्रेष्ठ गन्धहस्ती के समान, लोक में उत्तम, लोक के नाथ, लोक के हितकारक, लोक में दीपक के समान, लोक में उद्योत - प्रकाश करने वाले, अभय देने वाले, जीवन - संयम, जीवन देने वाले, बोधि सम्यकत्व देने वाले, धर्म के देने वाले, धर्म की देशना देने वाले, धर्म के नायक, धर्म रूप रथ को चलाने में सारथि के समान, चारों गति का नाश करने वाले, श्रेष्ठ धर्म चक्रवर्ती, भव समुद्र में द्वीप के समान् रक्षण देने वाले, अप्रतिहत - अस्खलित श्रेष्ठ ज्ञान और दर्शन को धारण करने वाले दूसरों को मुक्ति दायक सर्वज्ञ, स्वदर्शी शिवरूप ———ऐसी सिद्धि गति नामक स्थान पर पहुँचे हुऐ ——— चरम अन्तिम तीर्थंकर, पूर्व में हुए तीर्थंकरों द्वारा निर्दिष्ट और पूर्व में वर्णित समग्र गुणों से युक्त

यावत् अपुनरावृत्ति - सिद्धिगति को प्राप्त करने की अभिलाषा करने वाले श्रमण भगवान महावीर को नमस्कार हो।

(कल्पसूत्र Pg. 30 श्लोक 16)

गर्भ में स्थित भगवान महावीर ने मातृभक्ति के कारण माता को कष्ट न हो इस दृष्टि से हिलना डुलना बन्द कर दिया। लेकिन उनके ऐसा न करने से रानी त्रिशला के मन में विचार हुआ कि मेरा यह गर्भ पहले जो हिलता - डुलता था हठात् क्या हो गया और वह अनिष्ट आशंका से दुःखी हो गयी। तब श्रमण भगवान महावीर ने माता के मन में उठे विचारों को जानकर अपने शरीर को हिलाया तत्पश्चात् त्रिशला का हृदय पुनः प्रसन्नवदन हो गया। तब भगवान महावीर ने गर्भ में रहते हुये इस प्रकार अभिग्रह लिया कि जब तक मेरे माता पिता जीवित रहेंगे मैं अणागरित्व प्रव्रज्या नहीं लूँगा।

उस काल, उस समय, ग्रीष्म ऋतु के प्रथम मास के द्वितीय पक्ष में, चैत्र मास के शुक्ल पक्ष में शुक्ला त्रयोदशी के दिन पूरे नौ महीने साढ़े सात दिनों के पूर्ण होने पर, जब नक्षत्र अपनी उच्चतम स्थिति को प्राप्त थे, जब चन्द्रयोग से दिशाओं के समूह जब निर्मल थे, अन्धकार हीन और ज्योतिष विशुद्ध काल था, सारे शकुन जब शुद्ध थे, जब अनुकूल दक्षिण वायु भूमि को स्पर्श कर रही थी, जब भूमि धान्य से परिपूर्ण थी और जब सारे मनुष्य प्राणी प्रभुदित थे तथा क्रीड़ा में लीन थे तब अर्द्ध रात्रि के समय उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र में श्रमण भगवान महावीर स्वस्थ देही त्रिशला के पुत्र रूप में अपनी आरोग्य युक्त देही से प्रसूत हुये।

भगवान महावीर के पांच कल्याणक च्यवन, गर्भ, जन्म, दीक्षा, केवलज्ञान उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र में हुऐ तथा स्वाति नामक नक्षत्र में वे सिद्ध बुद्ध तथा मुक्त हुऐ।श्रमण भगवान महावीर काश्यप गोत्रीय थे। उनके तीन नाम इस प्रकार थे माता पिता ने उनका नाम वर्द्धमान रखा था। स्वकीय विशद् बुद्धि से कठिन परिश्रम करने के कारण वे श्रमण कहलाये। भय भैरव के उत्पन्न होने पर भी अचल रहने वाले, परिषह और उपसर्गों को शान्ति और क्षमा से सहन करने में समर्थ, बुद्धिमान, प्रिय और अप्रिय में समभावी, संयम युक्त और अतुल पराक्रमी होने के कारण

देवताओं ने श्रमण भगवान महावीर नाम रखा था। पुत्र जन्मोत्सव की खुशी में सिद्धार्थ राजा ने १० दिन व्यापी उत्सव का सम्पादन किया । ग्यारहवें दिन अशुचि निवारण के पश्चात् बारहवें दिन एक बड़ा भोज दिया। जिसमें सभी मित्रों, सम्बन्धियों, स्वंजनों, परिवारवालों को आमन्त्रित किया तथा श्रमण भगवान महावीर का वर्द्धमान नामकरण किया गया।

-------✱-------

प्राकृत कथा साहित्य

प्रो. माधव श्रीधर रणदिवे, सातारा,

कथा साहित्य और मानवीय जीवन :

पद्म चरित्र (रामायण) पर एक महाकाव्यरूप उपन्यास है। इसमें कर्मसिद्धान्त का उपयोग किया है। कथा - उपकथाओं से यह पउम चरियं महाकाव्य रोचक और मनोवेधक हो गया है।

वसुदेवहिंड़ी - जैन कथासाहित्य में वसुदेवहिंडी प्रथम श्रेणी की प्राकृत कृति है। वसुदेवहिंडी में दो विभाग हैं। पहले में २९ और दूसरे में ७१ लम्बक। ऐसा यह १०० लम्बक का १०००० श्लोक प्रमाण ग्रन्थराज है। इसमें कथोत्पत्ति, पीठिका, मुख, प्रतिमुख, शरीर और उपसंहार नाम के दो अधिकार हैं। १९वाँ और २०वाँ लम्बक अनुपलब्ध हैं और १७वाँ अपूर्ण है। उपसंहार अधिक भी उपल्ब्ध नहीं। पहला भाग संघदासगणि ने लिखा और दूसरा भाग धर्मसेनगणि ने,

कथोत्पत्ति में जम्बूस्वामीचरित्र, कुबेरदत्तचरित्र, महेश्वर दत्तारव्यान, वलकल चरित्र, अणादिव्यदेव की उत्पत्ति, आदि का वर्णन है। आगे धम्मिल्लहिंड़ी शुरू होती है। पीठिका में प्रद्युम्न, शम्बुक कथाओं का प्रारम्भ हो गया है।

वसुदेवहिंड़ी अर्थात् कृष्णपिता वसुदेव का परिभ्रमण। द्वारवती में से बाहर जाकर वसुदेव देश - परदेश में भ्रमण करने लगे। प्रवास में अनेक संकट - कष्टों को सामना देते उन्होंने अपने प्रभावशाली व्यक्तित्व और पराक्रम से अनेक मानव और विद्याधर कन्याओं से विवाह किया। वे अपने आत्मीयजनों को अपना रोमांचित वृत्तान्त कहने लगे। इसमें प्रसंगों के अनुरूप दृष्टान्त और बोध पर धर्मकथायें दी हैं। वसुदेवहिंडी की शैली सुलभ, स्वाभाविक और प्रासादयुक्त है।

समराइच्च कहा - ८वीं शताब्दी में शंम्भवभट और गंगा के सुपुत्र हरिभद्र चित्रकूट में जितारी महाराज के पुरोहित थे। वैदिक दर्शन में वे जाने -

माने पण्डित थे। एक बार उन्मत्त हाथी से बचने के लिए उन्हें जिनमन्दिर का आश्रय लेना पड़ा। वहाँ याकिनीमहत्तरा के निर्देश से जिनभट्ट के मार्गदर्शन में उन्होंने जैन दर्शन का अध्ययन किया। जिनमन्दिर का आश्रय लेना पड़ा। वहाँ याकिनीमहत्तरा के निर्देश से जिनभट्ट के मार्गदर्शन में उन्हें गौरव से सूरिपद पर प्रतिष्ठित किया। प्राकृत और संस्कृत में अनेक ग्रन्थ लिख कर वे युगप्रधान बन गये।

अशुभ कर्मनिदान पर नौ भवों में हरिभद्रसूरि ने प्राकृत में गद्य-पद्य मिश्रित अनोखी मनोरंजक दिव्य मानुष धर्मकथा लिखी। उन्होंने सभी भवों में प्रतिशोध की भावना विभिन्न रूप में व्यक्त की है।

धूर्ताख्यान - मूलदेव, खण्डरिक, एलाषाढ, यश ये चार पुरुष और खण्ड पाना स्त्री ऐसे पाँच चोर धूर्तों की यह धूर्ताख्यान कथा लिखकर हरिभद्रसूरि ने रामायण, महाभारत, आदि वैदिक पुराण, ग्रन्थों की अद्‌भुतता की व्यंगपूर्ण हँसी उड़ाई है। Haribhadra is a genius by birth and satirist by temperament, इन शब्दों में डॉ. हर्मन याकोबी ने उनकी स्तुति की है।

कुवलयमाला - दाक्षिण्यचिन्ह उद्योतन सूरि नें (९वीं शताब्दी) गद्य पद्य मिश्रित चम्पू रूप में कुवलयमाला नाम की प्रचण्ड प्राकृत कथा लिखी है।कुवलयमाला विजयानगरी के विजयसेन राजा और भानुमती रानी की सौन्दर्य शालिनी सुकन्या थी। लेकिन वह पुरुषों का द्वेष करनेवाली थी। अवधिज्ञानी मुनि की भविष्यवाणी से अयोध्यापति हठ वर्मा के सुपुत्र कुवलयचन्द्र ने पूर्वजन्म के स्मरण से कुवलयमाला की पादपूर्ति की शर्त पूर्ण की और उसके साथ विवाह किया। उत्तरावस्था में संसारविरक्त होकर पृथ्वीसार पुत्र को राज्य देकर उन्होंने संयमीजीवन व्यतीत किया। यह प्रेमकथा उद्योतनसूरि ने क्रोध, मान, माया, लोभ और मोंह के भयानक परिणाम चण्डसोम मानभट्ट, मायादित्य, लोभदेव और मोहदत्त के पूर्वजन्म के सम्बन्ध में कहे। जन्मान्तर की अवान्तर कथाएँ भी उद्योतन सूरि ने बड़े कौशल्य से लिखी हैं। कुवलयमाला कथासाहित्य का अनमोल रत्न है।

उपदेशमाला विवरण - जयसिंहसूरि ने (९वीं शताब्दी) उपदेशमालाविवरण नाम का १५६ कथाओं का ग्रन्थ लिखा। इस ग्रन्थ में धर्म, नीति सद्‌गुणमहिमा, दुर्गुणनिन्दा, आदि विषयों पर श्रंगार, वीर, करुण रसात्मक कथायें लिखी है।

सुरसुंदरीचरियं - जिनेन्द्रसूरि के शिष्य धनेश्वर (११वीं शताब्दी) चित्रवेग विद्याधर और उसकी प्रेयसी सुरसुन्दरी की प्रणयकथा प्राकृत में ४००० गाथाओं में लिखी है।

णाणपंचमी कहा - प्रतिभाशाली महेश्वरसूरि ने (११वीं शताब्दी) ज्ञान पंचमी व्रत का महात्म्य बताने के लिये णाणपंचमीकथा लिंखी। इसमें दस कथायें २००० गाथाओं में लिखी हैं।

कहाणयकोसो - जिनेश्वरसूरि ने (११वीं शताब्दी) कहाणयकोसो कथाकोशप्रकरण) जिनपूजा, मुनिदान, आदि प्रतिपादन करने के लिये ३० गाथाओं पर प्राकृत टीका के स्वरूप में ३६ मुख्य और ५ अवान्तर कथायें लिखी हैं।

कहावली - भद्रेश्वर ने (११वीं शताब्दी) कहावली नाम प्राकृत कथाओं का विशाल ग्रन्थ लिखा है। इसमें त्रिषष्टिशलाका पुरुषों का जीवन चरित्र तथा कालकाचार्य से हरिभद्रसूरि तक के प्रमुख आचार्यों की जीवन कथायें दी हैं।

कहारयण कोसो - गुणचन्द्रगणि ने (१६वीं शताब्दी) गद्य और पद्य में अलंकारप्रधान प्राकृत में ५० कथायें लिखी है। इसमें संस्कृत और अपभ्रंश का भी उपयोग किया है। इस तरह पासमहचरियं, महावीरचरियं अनन्तनाथस्तोत्र, वीतराग स्तव, प्रमाणप्रकाश आदि ग्रन्थों की भी उन्होंने रचना की है।

कालियाचरिय कहाणयं - देवेन्द्रसूरि, मलधारी हेमचन्द्र, भद्रेश्वर सूरि, धर्मघोषसूरि, भावदेवसूरि, धर्मप्रभसूरि, आदि आचार्यों ने धारावास के राजपुत्र कालक पर प्राकृत में कथायें लिखी है। देवेन्द्रसूरि ने (११वीं शताब्दी) स्थानक प्रकरण वृत्ति या मूल शुद्धटीका के अन्तर्गत लिखी कालकाचार्य की कथा प्राचीन, प्रदीर्घ और आदर्श है। उज्जैनी के उन्मत्त गर्दाभिल्लराजा ने कालकाचार्य की भगिनी आर्यिका सरस्वती का अपहरण

किया। इसलिये उन्होंने मुनिवेष छोड़कर लोंगों को प्रभावित किया और शक राजा के सहायता से गर्दाभिल्ल को मार कर सरस्वती को छुटकारा दिलाया। आखिर प्रायश्चित लेकर दोनों ने संयमी जीवन बिताया। यह अत्यन्त रोचक कथा आज भी जैन समाज गौरव से याद करता है।

नम्मयासुंदरीकहा - महेश्वरसूरि ने (१२वीं शताब्दी) शीलव्रतपालन में दृढ़ नर्मदा सुन्दरी की कथा अलंकार युक्त बड़ी रोचक शैली में लिखी है।

कुमारपालप्रतिबोध - कलिकाल सर्वज्ञ हेमचन्द्राचार्य ने गुर्जराधिपति कुमारपाल को विविध कथाओं द्वारा जैनदर्शन का बोध देकर सम्यकत्वी और समतावादी कैसे बनाया इसका वर्णन सोमप्रभाचार्य ने (१२शताब्दी) कुमारपालप्रतिबोध ग्रन्थ में दिया है। इस ग्रन्थ में पांच प्रस्ताव हैं और विविध कथायें है। झूटे भाषण, चोरी, व्यभिचार, द्यूत, मद्यपान, मांसाहार, आदि पापाचरण के घोर परिणाम की कथायें दी हैं। गुरुसेवा, शीलव्रत, तप, दान, आदि के शुभ फल कथन करने वाली कथायें भी दी है। तथा व्रतकथाओं द्वारा श्रावकों के बारह व्रत समझाये हैं। कषायपरिणाम और सम्यक्त्व की कथायें रोचक शैली से वर्णन की हैं। अधिकांश कथायें प्राकृत में हैं, कुछ कथायें संस्कृत में भी लिखी है। सोमप्रभाचार्य ने स्थूलभद्र और कोशा की मनोरंजक और उद्‌बोधक कथा अपभ्रंश भाषा में लिखी हैं। इन सब कथाओं में उन्होंने गद्य और पद्य का विपुल उपयोग किया है।)

सिरिसिरिवालकहा - रत्न शेखर सूरि ने (१४वीं शताब्दी) सिद्धचक्र का महत्व बताने के लिये मदनसुन्दरी और श्रीपाल राजा की प्रदीर्घ कथा प्राकृत में बड़ी रोचक शैली में लिखी है।

सुदंसणाचरियं - श्रीमद् विजयदेवेन्द्र सूरिश्वरजी कृत प्राकृत में लिखी गई यह कथा बहुत प्राचीन होकर मौखिक रूप में आई है। भरुच के वनखण्ड में बरगद के पेड़ पर रहती एक चील एक दिन अपने बच्चों को घोसले में छोड़कर खुराक लाने गई थी। वापस लौटते एक के बाण से घायल हो गई। भाग्यवश वहाँ आये मुनियों ने नवकार मन्त्र पढ़ा। भाव शुभ होने से मर कर वह सिंहल की राजकुमारी सुदर्शना हुई। उस भव्य जीव की यह कथा अति मनोवेधक शैली से सूरिश्वरजी ने लिखी है।

पाइयकहासंगहो - पद्मचन्द्रसूरि के किसी शिष्य ने विक्कमसेणचरियं नाम का कथाग्रन्थ लिखा। इस ग्रन्थ में आई १४ कथाओं में से १२ कथायें पाइयकहासंगहो में समाविष्ट हैं। वह ग्रन्थ १४वीं शताब्दी के कोई प्रतिभाशाली जैन साहित्यकार या आचार्य ने लिखा होगा। दान, शील, तप, भावना, सम्यक्त्व, नमस्कारमन्त्र, आदि से सम्बन्धित कथायें इस में लिखी हैं। यह एक अनोखा कथासंग्रह है।

रयणसेहरकहा - जयचन्द्रसूरि के शिष्य जिनहर्ष गणि ने (१५वीं शताब्दी के अन्त में) पर्व और तिथियों का महत्व बताने के लिये रत्नशेखर और रत्नवती की प्रणयकथा प्राकृत भाषा में लिखी है।

इसी तरह धर्मदास गणि ने 'उवएसमाला' तथा पद्म सूरि के एक अज्ञान शिष्य जिनचन्द्र ने 'संवेगरंगमाला' ग्रन्थ संवेग का निरूपण करने वाली उपदेशपक कथायें लिखी है। वीरदेवगणि ने महिवालकहा, धर्मदासगणि की दृष्टान्तपूर्वक उवएसमाला, हरिभद्रसूरि की उवएसपय, जयकीर्ति की सीलोवएसमाला, विजयसिंहसूरि की भुवणसुंदरी कहा श्रावक अतडकृत विवेकमंजरी, सहस्रावधानी मुनि सुन्दर कृत सूरिकृत उवएसरयणारयर, शुभवर्धमानगणिकृत वर्धमानदेशना, आदि कथांग्रन्थों का यहाँ केवल नामनिर्देश ही किया है।

अपभ्रंशकथासाहित्य - श्वेताम्बर साहित्यकारों की तरह दिगम्बर जैन साहित्यकारों ने भी प्राकृत कथा साहित्य की निर्मिति में महान् योगदान किया है। कविराज स्वयंभूदेवकृत पउमचरिउ, रिट्ठणेमिचरिउ, महाकवि पुष्पादन्तकृत णायकुमारचरिउ, जसहरचरिउ और महापुराण, धनपालकृत भविसय कहा, धाहिलकृत पउमसिरिचरिउ, मुनिकनकासरकृत करकंडचरिउ, वीरकृत जंबूसामि चरिउ, आदि अपभ्रंश भाषा में कई कथाग्रन्थों की रचनाकर के अपनी लोकानुरंजक उदार वृत्ति का परिचय दिया है।

आगे तो हिन्दी, गुजराती, राजस्थानी, कान्नडी, मराठी, आदि लोक भाषाओं में जैनाचार्यों ने अपनी अनोखी कृतियाँ निर्माण की हैं।

प्राकृत साहित्य की महानता - हम ऊपर देखे हैं कि प्राकृत में जैन कथा साहित्य ही विपुलता से भरा है। इन प्राकृत कथासाहित्य में आत्मोन्नति के लिए साधना करना, दया, क्षमा, सत्य, शील आदि सद्गुण प्राप्त

करना मद्य, मांस, शिकार, द्यूत आदि व्यसनों को भयानकता दिखा कर शुभ प्रवृत्ति अपनाने की प्रेरणा मिलती हैं। मनुष्यों के विभिन्न वर्गों का जीवन हमें इन कथाओं में मिलता है। इतिहास, सामाजिक, राजकीय, व्यायाम, आदि विषयक विवरण की विशेषता हम इन कथाओं से जान सकते है। व्यापार में परदेशगमन, साहस, कपटाचार, द्वेषबुद्धि से बंधु आदि सही चित्रण हम इन कथाओं में देख सकते है। इनके अलावा द्वेष, मत्सर, असत्य, कपटाचार, आदि छोड़कर एक दूसरे के लिए साहस करना, प्रेम से आचरण करना, ऐसी मानवतावादी शिक्षा भी हमें इन प्राकृत कथासाहित्य से मिलती है।

संस्कृत, प्रालि, प्राकृत इन भारतीय प्राच्य भाषाओं के जानकार **डॉ. जॉन हर्टल** कहते हैं -

"जैन कथासाहित्य सिर्फ संस्कृत और अन्य भाषाओं के अध्ययन के लिये ही उपयोगी नही, लेकिन भारतीय सभ्यता के इतिहास पर प्रकाश डालता है।"

o o o

सन्दर्भ ग्रन्थ -

१. History of Indian Literature by Winternitz.
२. जैन साहित्य के संक्षिप्त इतिहास - मोहनलाल दलिचंद देसाई
३. प्राकृत साहित्य का इतिहास

डॉ. जगदीश चन्द्र जैन.

o o o

-------✱-------

रूद्रपल्लीय गच्छ के इतिहास पर संक्षिप्त प्रकाश

– डॉ. शिवप्रसाद सिंह

क्रमांक	प्रतिष्ठावर्ष	तिथि, वार मुनि का नाम	प्रतिष्ठापक परिकरलेख	प्रतिमालेख	प्रतिष्ठास्थान	संदर्भग्रन्थ
३१.	१५१७	माघ वदि ५ शुक्रवार	देवसुन्दरसूरि के शिष्य सोमसुन्दरसूरि	चन्द्रप्रभ की प्रतिमा का लेख		नाहटा, पूर्वोक्त लेखांक १००४
३२.	१५१९	माघ सुदि ४ रविवार	देवसुन्दरसूरि	वासुपूज्य की प्रतिमा का लेख	सुमतिनाथ जिनालय, सीनोर	मुनिबुद्धिसागर-संपा० जैन धातुप्रतिमा लेखसंग्रह भाग२, लेखांक ३६६
३३.	१५२५	मार्गशीर्षवदि९ शुक्रवार	देवसुन्दरसूरि के पट्टधर सोमसुन्दरसूरि	कुंथुनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	शीतलनाथ जिनालय, बालौतरा, राजस्थान	नाहर,पूर्वोक्त भाग १, लेखांक ७३४

क्रमांक	प्रतिष्ठावर्ष	तिथि, वार	प्रतिष्ठापक मुनि का नाम	प्रतिमालेख परिकरलेख	प्रतिष्ठास्थान	संदर्भग्रन्थ
३४.	१५२५	माघ सुदि ५ बुधवार	हेमप्रभसूरि	चन्द्रप्रभ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	खरतरगच्छीय आदिनाथ जिनालय कोटा	विनयसागर,पूर्वोक्त, लेखांक ६६९
३५.	१५२५	फाल्गुन सुदि ७ शनिवार	जिनराजसूरि के पट्टधर जिनोदयसूरि	आदिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	जैन मंदिर, करेड़ा	विजय धर्मसूरि, पूर्वोक्त लेखांक ३९२
३६.	१५२५	फाल्गुन सुदि ७ शनिवार	जिनराजसूरि के पट्टधर जिनोदयसूरि	सुमतिनाथ की चौवीसी प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख		नाहटा पूर्वोक्त लेखांक१२५२
३७.	१५२८	वैशाखसुदि२ शनिवार	गुणसुन्दरसूरि	आदिनाथ की प्रतिमा पर उत्कीर्ण लेख		वहीं, लेखांक २३४२

क्रमांक	प्रतिष्ठावर्ष	तिथि, वार	प्रतिष्ठापक मुनि का नाम	प्रतिमालेख परिकरलेख	प्रतिष्ठास्थान	संदर्भग्रन्थ
३८.	१५३२	ज्येष्ठ बदि ३ रविवार	देवसुन्दरसूरि के शिष्य गुणसुन्दरसूरि	पद्मप्रभ की प्रतिमा का लेख	यति किशनजी के पास रखी प्रतिमा	नाहर, पूर्वोक्त- भाग१, लेखांक ५७९
३९.	१५३२	,,	,,	पद्मप्रभ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	पार्श्वचन्द्रगन्छ उपाश्रय, जयपुर	विनयसागर, पूर्वोक्त, लेखांक ७४१
४०.	१५३६	फाल्गुन सुदि ३ रविवार	देवसुन्दरसूरि	कुंथनाथ की चौवीसी प्रतिमा का लेख		नाहटा, पूर्वोक्त लेखांक १४३९
४१.	१५३८	ज्येष्ठ सुदि २ मंगलवार	जिनदत्तसूरि के पट्टधर देवसुन्दरसूरि	चौवीसी जिन प्रतिमा का लेख	हीरालाल चुन्नीलाल का देरासर लखनऊ	नाहटा, पूर्वोक्त भाग२, लेखांक १६२१

क्रमांक	प्रतिष्ठावर्ष	तिथि, वार	प्रतिष्ठापक मुनि का नाम	प्रतिमालेख परिकरलेख	प्रतिष्ठास्थान	संदर्भग्रन्थ
४२.	१५४२	माघ सुदि २ शनिवार	जिनोदयसूरि के पट्टधर देवसुन्दरसूरि		खरतरगच्छीय बड़ा मंदिर तुलापट्टी कलकत्ता	मुनि कांतिसागर -संपा० जैन धातु प्रतिमा लेख
४३.	१५४२	माघ सुदि ५	सोमसुन्दरसूरि के शिष्य हरिकलश	मुनिसुव्रत की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	सुमतिनाथ जिनालय जयपुर	लेखांक २४२ विनयसागर-पूर्वोक्त लेखांक ८३०
४४.	१५४५	ज्येष्ठ सुदि १२ गुरुवार	हेमप्रभसूरि	धर्मनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	खरतरगच्छीय आदिनाथ जिनालय, कोटा	विनयसूरि सागर पूर्वोक्ति लेखांक ८४०
४५.	१५५३	फाल्गुन वदि ३	गुणसुन्दरसूरि	आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	विमलनाथ जिनालय, सवाई माधोपुर	वहीं, लेखांक ८७३
४६.	१५५६	ज्येष्ठवदि १२	हर्षसुन्दरसूरि	चौवीसी पट्ट पर उत्कीर्ण लेख	वालावसही, शत्रुंज्य पालिताना	मुनि कांतिसागर संपा० शत्रुंजयभव लेखांक २५६

क्रमांक	प्रतिष्ठावर्ष	तिथि, वार	प्रतिष्ठापक मुनि का नाम	प्रतिमालेख परिकरलेख	प्रतिष्ठास्थान	संदर्भग्रन्थ
४७	१५५६	ज्येष्ठ सुदि९	देवसुन्दरसूरि	शीतलनाथ की प्रतिमा का लेख	चिन्तामणिजी का मंदिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त लेखांक ११२६
४८.	१५५६	ज्येष्ठ सुदि ५ रविवार	सर्व्वसूरि	सुमतिनाथ की प्रतिमा का लेख		वहीं, लेखांक १६२६
४९.	१५६९	श्रावण सुदि ५	आनन्दसूरि के शिष्य चारित्रराज एवं देवरत्न	ह्रींकारयंत्र पर उत्कीर्ण लेख		वहीं लेखांक १४५५
५०.	१५७०	माघ वदि ५ रविवार	गुणसमुद्रसूरि	आदिनाथ की प्रतिमा का लेख		वहीं, लेखांक १५३४

क्रमांक	प्रतिष्ठावर्ष	तिथि, वार	प्रतिष्ठापक मुनि का नाम	प्रतिमालेख परिकरलेख	प्रतिष्ठास्थान	संदर्भग्रन्थ
५१.	१५९७	फाल्गुन सुदि ५ मंगलवार	देवसुन्दरसूरि के शिष्य वाचक विवेकसुन्दरके शिष्य वाचक हेमरत्न के शिष्य वाचक सोमरत्न के शिष्य वाचक गुणरत्न एवं उनके गुरुवंधु लक्ष्मीरत्नगणि	तीर्थयात्रा विवरण का उल्लेख	विमलवसही आबू	मुनि जयन्तविजय संपा० अर्बुद प्राचीन जैनलेख संदोह लेखांक २०१
५२.	मिति विहीन	——	गुणसुन्दरसूरि	आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	चिंतामणिजी का मंदिर वीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्ति लेखांक ८२५
५३.	१५९९	वैशाख सुदि५ गुरुवार	गुणसुन्दरसूरि के शिष्य गुणप्रभसूरि	आदिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	जैनमंदिर चेलपुरी दिल्ली	नाहर, पूर्वोक्त भाग१, लेखांक ५०१

अभिलेखीय साक्ष्यों की उक्त सूची के लेखों को तीन वर्गों में बांटा जा सकता है। प्रथम वर्ग में वे लेख रखे जा सकते हैं जिसमें उल्लिखित मुनिजनों का साहित्यिक साक्ष्यों में भी नाम मिलता है। इनका विवरण इस प्रकार मिलता है:

वि. सं. १२९६ के प्रतिमालेख[१०] में उल्लिखित अभयदेव सूरि के शिष्य देवभद्रसूरि समसामयिकता और नामसाम्य के आधार पर साहित्यिक साक्ष्यों के आधार पर पुनर्गठित गुरू - शिष्य परम्परा की तालिका के अभयदेवसूरि (द्वितीय) के पट्टधर देवभद्रसूरि से अभिन्न मानें जा सकते हैं। ठीक यही बात वि. सं. १३०२[११] के प्रतिमालेख में उल्लिखित देवभद्रसूरि के बारे में भी कही जा सकती है। इसी प्रकार वि. सं. १३२६ के प्रतिमालेख[१२] में उल्लिखित श्रीचन्द्रसूरि समसामयिकता और नामसाम्य के आधार पर तालिका संख्या १ में उल्लिखित देवभद्रसूरि के प्रशिष्य तथा प्रभानन्दसूरि के शिष्य एवं पट्टधर श्रीचन्द्रसूरि से अभिन्न समझे जा सकते हैं। वि. सं. १४२१ के प्रतिमालेख [१३] में उल्लिखित गुणचन्द्रसूरि भी समसामयिकता और नामसाम्य के आधार पर तालिका संख्या १ में उल्लिखित गुणाकरसूरि और अजितदेवसूरि के गुरु गुणचन्द्रसूरि से अभिन्न मानने में कोई वाधा नहीं है। ठीक यही वात वि. सं. १४३२ के प्रतिमालेख[१४] में उल्लिखित अभयदेवसूरी तथा साहित्यिक द्वारा ज्ञात अभयदेवसूरि (तृतीय) (वर्धमानसूरि, पृथ्वीचन्द्रसूरि आदि के गुरु) के बारे में भी कहीं जा सकती है।

लूणवसही के देरी न. ११ की एक जिनप्रतिमा पर वि. सं. १४१७ का लेख उत्कीर्ण है[१५] जिससे ज्ञात होता है कि यह प्रतिमा ज्ञानचन्द्रसूरि द्वारा प्रतिष्ठापित की गयी थी। लेख में पूर्णचन्द्रगणि और संघतिलक सूरि का भी उल्लेख मिलता है। लेख का मूलपाठ निम्नानुसार है:

संवत् १४१७ आषाढ सुदि ५ दिने श्रीसंघतिलक सूरिभिः पूर्णचन्द्रगणिना। ठ० मूंजाकेन श्री महावीर बिंबं का० प्र० श्री ज्ञानचन्द्रसूरिभिः ।। ठ० मूंजाके०।।

ये तीनों मुनिजन किस गच्छ से सम्बद्ध थे, साथ ही साथ ये अलग - अलग गच्छों के थे या एक के। इन बातों का उक्त लेख से ज्ञात नहीं हो पाता। इसके लिये हमें अत्यन्त प्रयास करना होगा।

उक्त लेख में उल्लिखित ज्ञानचन्द्रसूरि को समसामयिकता और नामसाम्य के आधार पर अर्बुदतीर्थोद्धारक धर्मघोषगच्छीय प्रसिद्ध आचार्य ज्ञानचन्द्रसूरि[१६] से जिनके द्वारा वि. सं. १३७४ - १३९६ के मध्य प्रतिष्ठापित ४० से अधिक जिनप्रतिमायें अद्यावधि प्राप्त हो चुकी हैं, अभिन्न माना जा सकता है। ठीक यही बात उक्त लेख १९ में उल्लिखित संघतिलकसूरि और रुद्रपल्लीयगच्छ के प्रसिद्ध आचार्य संघतिलकसूरि के बारे में भी कही जा सकती है। लेख में उल्लिखित तीसरे मुनि पूर्णचन्द्रगणि के बारे में जानकारी के अभाव में कुछ भी कह पाना कठिन है।

वि. सं. १५६९ लेख[१७] में उल्लिखित चारित्रराज एवं देवरत्नसूरि के गुरु आनन्दसुन्दर तथा शीलवतीकथा (रचनाकाल वि. सं. १५६२/ सन् ई. सन् १५०६) के रचनाकार आज्ञासुन्दरसूरि के गुरु आनन्दसुन्दर भी यदि एक ही व्यक्ति हों तो इसमें कोई आश्चर्य नहीं है। इस प्रकार देवभद्रसूरि, श्रीचन्द्रसूरि, अभयदेवसूरि 'तृतीय' मुनिसुन्दरसूरि, संघतिलकसूरि, अभयदेवसूरि तृतीय आदि का दोनों प्रकार के साक्ष्यों में उल्लेख मिल जाता हैं। जहां साहित्यिक साक्ष्य इनके पूर्वापर सम्बन्धों के बारे में मौन हैं वहीं अभिलेखीय साक्ष्यों से वे निश्चित हो चुके हैं।

क्रमशः

-------✱-------

मलयासुन्दरी चरित्र

पुर्वानुवृत्ति

मलया - कुमार ! यह गुटिया आपको कहाँ से मिली?

कुमार - एक दिन हमारे शहर में एक विद्यासिद्ध पुरुष आया था, उसकी मैंने खूब सेवा की। संतुष्ट होकर उस सिद्ध पुरुष ने रूप परावर्तन करने आदि के मुझे अनेक प्रयोग बतलाये थे। वे सब मैंने सिद्ध कर रक्खे हैं। उन्हीं में से यह एक गुटिका भी है; जिसके प्रभाव से आज अपने दोनों इस संकट से उतीर्ण हुए हैं।

मलया - इस तरह के चमत्कारिक प्रयोगवाली क्या दूसरी गुटिका भी आप के पास है ?

कुमार - हाँ है, उसका प्रभाव ऐसा है कि आम के रस के साथ घिसकर तिलक करने से स्त्री, पुरुष का रूप धारण कर सकती है, परन्तु वह गुटिका इस समय मेरे पास नहीं है।

सुन्दरी! अब मुझे जाने दो, अधिक समय यहाँ रहने से फिर कोई अन्य उत्पात खड़ा न हो जाय। आज के प्रसंग से तुम्हें समझना चाहिए कि विधि हमारे अनुकूल है। मैं अवश्य अपना वचन पालने की पूरी कोशिश करूँगा। तुम्हारे मन की शान्ति के लिए मैं तुम्हें एक श्लोक दिये जाता हूँ। संकट में इसको याद करने से धैर्य प्राप्त होता है।

श्लोक का भाव - आखिर तो शुभाशुभ कर्मरूप भाग्य करता है वही होता है; परन्तु हृदय का चिन्तित कार्य नहीं होता। यह चित्त उत्सुक हो कर व्यर्थ ही अनेक उपाय विचारा करता है।

अर्थात् संसार में संयोग और वियोग, सुख और दुःख खुद के किये हुए शुभाशुभ कर्म के अनुसार ही हुआ करता है। परन्तु मनुष्य के विचारानुसार नहीं होता तथापि मानव स्वभाव के अनुसार मनुष्य का हृदय व्यर्थ ही अनेक उपाय सोचता रहता है। इस पूर्वोक्त श्लोक का अर्थ समझ लेने के कारण मलयासुन्दरी ने तुरन्त ही इस श्लोक को कंठस्थ

कर लिया। श्लोक के भावार्थ को विचार कर कुमारी प्रसन्न चित्त से कुमार के धर्मशास्त्र संबन्धी ज्ञान और उसके धैर्य की प्रशंसा करने लगी तथा ऐसे गुणवान पुरुष रत्न के समागम से वह अपने आपको कृतार्थ समझने लगी।

कुमार - सुन्दरी! अब तो मुझे प्रसन्न होकर जाने की आज्ञा दो। समय बहुत हो गया है, मेरे साथी मेरी बाट देख रहे होंगे।

मलया - कुमार! मैं अपने मुख से ऐसे शब्द कैसे कह सकती हूं, तथापि आप जाने के लिए इतने उत्सुक हैं और मेरे साथ विवाह करने का मुझे वचन देते हैं तो मैं इतने में ही संतोष मानकर प्रभु से प्रार्थना करती हूँ कि आपका मार्ग निष्कंटक हो। आप शान्ति पूर्वक अपने स्थानपर पहुँचे इतना शब्द बोलते ही कुमारी की आँखों में आश्रु भर आए। ह्रदय गद् गद् हो उठा। उससे आगे कुछ भी न बोला गया। वह आश्रु पूर्ण नेत्रों से टकटकी लगा कर कुमार की तरफ देखती रही।

कुमार धैर्य धारण कर उसके मस्तक चुम्बन द्वारा अन्तिम पवित्र प्रेमभाव का परिचय देकर किसी को मालूम न हो इस तरह जिस रास्ते से आया था उसी रास्ते से किले से बाहर हो गया, और प्रयाण के लिये तैयार होकर उसकी राह देखते हुए अपने साथियों से जा मिला। रास्ते में वह राज कुमारी से विवाह करने के अनेक उपायों के विचारों में लगा रहा। पृथ्वीस्थानपुर में पहुँचने तक राजकुमारी का चित्रपट उसके ह्रदय से क्षण भर के लिये भी दूर न हुआ। नगर में आकर विनय पूर्वक माता पिता को नमस्कार कर मलयासुन्दरी से मिला हुआ लक्ष्मीपुंज हार उसने अपने पिता को समर्पण कर दिया। पिता ने जब उस महाकीमती हार प्राप्ति का कारण पूछा तब शरम से समयोचित असत्य उत्तर देते हुए कुमार बोलां - चंद्रावती के राजपुत्र मलयकेतु ने मित्रता में बतौर निशानी के मुझे यह हार दिया है। यह सुन कर महाराज सूरपाल ने कुमार की प्रशंसा करते हुये कहा पुत्र! तेरा बड़ा अद्‌भुत कलाकौशल्य है कि जिससे थोड़े ही समय की मित्रता से उस राजकुमार ने तुझे ऐसा महाकीमती हार भेट कर दिया। राजा ने इस लक्ष्मीपूंज हार को कुमार की माता पद्‌मावती रानी को सौंप दिया। माता ने भी पुत्र की प्रशंसा कर वह दिव्य हार अपने गले में पहन लिया।

अब राजकुमार रात दिन मलयासुन्दरी के समक्ष, की हुई प्रतिज्ञा को पूर्ण करने के विचारों में निमग्न रहता है। वह सोचता है कि कुमारी के समक्ष की हुई दुष्कर प्रतिज्ञा को मैं किस तरह पूर्ण करूंगा? यह हृदय की बात माता पिता के समक्ष किस तरह कही जाय? अब वह सदैव इसी उधेड़धुन में लगा रहता है।

एक रोज चंद्रावती के महाराज वीरधवल का भेजा हुआ राजदूत राजा सूरपाल की सभा में आया। उस समय महाराज सूरपाल, महाबलकुमार, और प्रधानमंत्री मंडल सब राजसभा में बैठे हुए थे। द्वारपाल के साथ राजसभा में प्रवेश कर चंद्रावती के दूत ने महाराज सूरपाल को विनयपूर्वक नमस्कार कर कुशलवार्ता कथन पूर्वक अपने स्वामी का आदेश निवेदन किया। महाराज! मुझे आपके परम मित्र चंद्रावती नरेश ने आपकी सेवा में भेजा है। हमारे महाराज ने आपको प्रणाम पूर्वक कुशल मंगल पूछा है। विशेष समाचार यह है कि महाराज वीरधवल के रतिरंभा के रूप को तिरस्कार करनेवाली मलयासुन्दरी नाम की एक कन्या है।

हमारे महाराज ने उसका स्वयंवर मंडप रचा है। वंश परम्परा से मिला हुआ वज्रसार नामक धनुष उस मंडप में रक्खा जायगा। जो कुमार अपने पराक्रम से उस धनुष पर प्रत्यंचा चढ़ायेगा उसी के गले में राजकुमारी वरमाला डालेगी। इस स्वयंवर पर अनेक राजकुमारों को आमंत्रण देने के लिए चारों तरफ दूत भेजे गए हैं और आपके रूपवान, गुणवान, कलाभंडार महाबल कुमार को भी बुलाने के लिए मुझे भेजा गया है। आज जेठ बदि एकादशी है स्वयंवर का मुहुर्त बदि चतुर्दशी के दिन रक्खा गया है। यों तो मुझे वहां से रवाना हुए बहुत दिन हुए, परन्तु रास्ते में बीमार हो जाने के कारण मैं यहाँ पर जल्दी नहीं पहुँच सका। इसलिये महाराज अब समय बहुत थोड़ा रह गया है अतः महाबल कुमार को आप तुरन्त ही चंद्रावती की तरफ रवाना करें, क्योंकि अब बिलम्ब करने का समय नहीं रहा।

महाराज वीरधवल के स्वयंवर संबन्धी आमंत्रण से राजा सूरपाल को बहुत खुशी हुई। सम्मान पूर्वक आमंत्रण को स्वीकार कर दूत को वस्त्रादि के दान से सत्कारित कर विसर्जन किया। इस समय महाबल राजकुमार भी राजसभा में महाराज के पास ही बैठा हुआ था। चंद्रावती के दूत के वचन सुनकर उसका हृदय हर्ष से प्रफुल्लित हो उठा। वह प्रसन्न हो विचारने लगा - अहा! पुण्य की कैसी प्रबलता है! जिस कार्य के लिये मैं रातदिन

चिंतित रहता था वह भाग्य योग से आज सामने आ उपस्थित हुआ है। जो कार्य सामर्थ्य और धन व्यय से सिद्ध होना असंभवित सा था वही कार्य पुण्य योग से अब अपने स्वाधीन सा ही प्रतीत होता है। अब पिता की आज्ञा पाकर मैं शीघ्र ही चंद्रावती को जाऊंगा। स्वयंवर में आए हुए अनेक राज कुमारों का मानमर्दन कर, मलयासुन्दरी का पाणिग्रहण कर के मैं अपनी प्रतिज्ञा को पूर्ण करूंगा। इत्यादि अनेक विचार लहरियों से हर्षाकुल हुए राजकुमार की तरफ राजा ने दृष्टिपात किया। बेटा महाबल! तूं आज ही स्वयंवर पर चंद्रावती जाने की तैयारी कर। साथ में खूब सेना ले जाना। चंद्रावती नरेश बड़ा राजा है, एवं वह हमारा मित्र राजा होने से विशेष माननीय है।

कुमार —(हाथ जोड़कर, मस्तक झुका) पिताजी आपकी आज्ञा शिरोधार्य है। आप जब फरमायें तभी जाने के लिये तैयार हूँ।

राजा - (प्रधान मंत्री की तरफ देख कर) त्रीवर! सेनापति को आज्ञा करो, कुमार के साथ चंद्रावती जाने के लिए तैयारी करें। महाबल की ओर देख कर राजा ने कहाकि बेटा! चंद्रावती से लाया हुआ लक्ष्मीपूंज हार भी अपने साथ लेते जाना।

क्रमशः

भगवान महावीर २६००वीं जन्म जयन्ती समारोह के शुभारम्भ का भव्य आयोजन

शस्य श्यामल बंग भूमि की आदि संस्कृति का उत्स जैन धर्म रहा है। २३वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ का इस क्षेत्र से गहरा सम्पर्क रहा था। जिसका प्रभाव बंगाल के मानस पर आज भी स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। जैन धर्म के अन्तिम २४वें अधिनायक श्रमण भगवान वर्द्धमान महावीर का जन्म क्षेत्र यद्यपि बिहार की पावन भूमि रही लेकिन इस क्षेत्र का वर्णन बहुत ही स्पष्ट रूप से आगम ग्रन्थों में मिलता है। बंगाल की संस्कृति की मूल भित्ति में आज भी जैन दर्शन का जो प्रभाव देखने को मिलता है वह भगवान महावीर की देन कही जा सकती है। *कहते है कि बंगाल आज जो सोचता है वही कल के भारत की सोच है और* इसी को चरितार्थ किया है आज फिर इस भूमि ने भगवान महावीर के २६००वीं जन्म जयन्ती के उपलक्ष्य में आयोजित समारोहों के शुभारम्भ से। यह हमारा सौभाग्य है कि हमने भगवान महावीर का २५००वाँ निर्वाण दिवस भी मनाया और २६००वीं जन्म जयन्ती मनाने का भी अवसर हमें प्राप्त हुआ है। जिसके लिये कलकत्ता में भगवान महावीर २६००वीं जन्म जयन्ती समारोह समिति का गठन किया गया। समस्त जैन समाज ने एक जुट होकर इस समिति के अर्न्तगत इन समारोहों की श्रृंखला का मंगलमय प्रारम्भ भगवान महावीर के जन्म कल्याणक के दिन रविवार दिनाँक १६ अप्रैल २००० को नेताजी इंडोर स्टेडियम कलकत्ता में नवकार मंत्र के सामूहिक जाप अनुष्ठान द्वारा किया।

समारोह का प्रारम्भ श्रमणी जी के द्वारा मंगलाचरण से किया गया तत्पश्चात् समिति के मंत्री श्री सरदारमल कांकरिया ने स्वागत भाषण में समिति द्वारा आयोजित किये जाने वाले वर्ष व्यापी कार्यक्रमों का विवरण प्रस्तुत किया। मान्य अतिथि श्री तपन सिकदर (संचार मंत्री) ने अपने सारगर्भित भाषण में कहा कि वे बचपन से जिस संस्कार और संस्कृति में रहे है उसमें भगवान महावीर का सहयोग रहा है। भगवान महावीर ने पर्यावरण के विषय में जो दृष्टिकोण रखे

भगवान महावीर २६वीं जन्म जयन्ती समारोह के भव्य शुभारम्भ पर नेताजी इन्डोर स्टेडियम में पश्चिम बंगाल के राज्यपाल महामहिम श्री वीरेन जे. शाह (मध्य में) उनके बाँए तरफ नवकार मंत्र के महान आराधक श्री शशीकांत भाई मेहता तथा दाई तरफ समिति के अध्यक्ष प्रो० कल्याणमल लोढा।

आज के सभी वैज्ञानिक उसे मानते है। समणी प्रतिभा प्रज्ञा जी ने अपने वक्तव्य में आत्मा की मुक्ति पर जोर दिया। समारोह समिति के अध्यक्ष प्रो. लोढ़ा ने कहा कि धर्म वह चेतना है जो मनुष्य को संस्कारित एंवं सचेष्ट कर मानवीयता की ओर बढ़ाता है। महामहिम राज्यपाल श्री वीरेन जे. शाह ने भगवान महावीर के आदर्शों का वर्णन करते हुये कहा कि जैन दर्शन में मानव ही ईश्वर बनते है, ईश्वर मानव नहीं। तीर्थंकरों का जीवन चरित्र ही प्रत्येक मानव को ईश्वरत्व प्राप्त करने की प्रेरणा देता है। सभी गणमान्य अतिथियों को नवकार मन्त्र उत्कीर्णित स्वर्ण मंडित स्मृति चिन्ह प्रदान किया गया। अन्त में श्री अश्विन भाई देसाई ने धन्यवाद ज्ञापन किया। समारोह का संचालन वृंद श्री भंवरलाल सिंधी द्वारा किया गया।

सभा के द्वितीय सत्र में राजकोट से पधारे नवकार मंत्र के महान आराधक श्री शशिकान्त भाई मेहता ने स्टेडियम में उपस्थित लगभग १० हजार लोगों को सामूहिक जाप अनुष्ठान कराया जिसमें पूर्ण स्पष्ट विवेचना तथा व्याख्या के साथ नवकार मंत्र की मालाएँ फेरी गयी। इतनी बड़ी संख्या में इस प्रकार का आयोजन जैन एकता और संगठन की दिशा में एक सफल और सार्थक प्रयास तो था ही साथ में भगवान महावीर के अनेकान्तवाद को व्यवहारिक रूप में अपना कर समस्त जैन समाज ने एक जुट होकर एकता के सूत्र में बंधकर सिर्फ भारत में ही नहीं वरन् समस्त विश्व को एकता, मैत्री, करुणा और भाई - चारे का संदेश प्रेषित किया है।

BOYD SMITHS PVT. LTD.
8, Netaji Subhas Road
B-3/5 Gillander House, Calcutta-700 001
Ph: (O) 220-8105/2139,Resi; 329-0629/0319

NAHAR
5/1, A.J.C. Bose Road, Calcutta-700 020
Ph: 247-6874,Resi: 244-3810

KUMAR CHANDRA SINGH DUDHORIA
7, Camac Street, Calcutta - 700 017
Ph: 282-5234/0329

ARIHANT JEWELLERS
Mahendra Singh Nahata
57, Burtalla Street, Calcutta -700 007
Ph: 238-7015, 232-4087/4978

CREATIVE LIMITED
12, Dargah Road, Post Box: 16127, Cal-17
Ph: (033) 240-3758/1690/3450/0514
Fax: (033) 240 0098, 2471833

IN THE MEMORY OF SOHANRAJ SINGHVI
VINAYMATI SINGHVI
13/4 Karaya Road, Calcutta - 700 019
Ph: (O) 2208967, (R) 2471750

GAUTAM TRADING CORPORATION
32, Ezra Street, Calcutta - 700 001
6th Floor, Room No - 654
Ph: (O) 235 0623, (R) 239-6823

VEEKEY ELECTRONICS
36, Dhandevi Khanna Road
Calcutta - 700 054
Ph: 352-8940/334-4140 (R) 352-8387/9885

SUDERA ENTERPRISES PVT. LTD.
1, Shakespeare Sarani, Calcutta - 700 071
Ph: 282-7615/7617/2726
Gram: Sudera

N. K. JEWELLERS
Valuable Stones, Silver wares
Authorised Dealers: Titan, Timex & H.M.T.
2, Kali Krishna Tagore Street (Opp. Ganesh Talkies)
Calcutta - 700 007
Phone: 239 7607

TARUN TEXTILES (P) LTD.
203/1, Mahatma Gandhi Road, Calcutta - 700 007
Ph: 238-8677/1647, 239-6097

ELECTRO PLASTIC PRODUCTS (P) LTD.
22, Rabindra Sarani, Calcutta - 700 073
Ph: 236-3028, 237-4039

IN THE MEMORY OF LATE
JITENDRA SINGH NAHAR
Rabindra Singh Nahar
40/4A, Chakraberia South, Calcutta - 700 020
Ph: (O) 244-1309, (R) 475-7458

SURAJ MAL TATER
C/o Surajmal Chandmal
137, Bipin Behari Ganguli Street
Calcutta - 700 012
Ph: Shop -227-1857 (R) 238-0026

MUSICAL FILMS (P) LTD.
9A, Explanade East
Calcutta - 700 069

PANKAJ NAHATA
Oswal Manufacturers Pvt. Ltd.
Manufacturers & Suppliers of Garments & Hosiery Labels
4, Jagmohan Mallick Lane, Calcutta - 700 007
Ph: (O) 238-4755, (R) 238-0817

APRAJITA
Air Conditioned Market
Calcutta - 700 071
Ph: 282-4649, Resi: 247-2670

MANI DHARITAR UDYOG
Manufactureres of Flexible Ribbon,
Hookup, Main Cards, P. V. C. Insulated Wires and Cables.
JHANWAR LAL JAIN
96, Old Roshan Pura, Najaf Garh
New Delhi - 110043, Ph:(O) 5016527
(R) 545 3415, 542 3304
Mobile: 9811075330,

ASHOKE KUMAR RAIDANI
6, Temple Street, Calcutta
Ph: 237 4132/236 2072

B. W. M. INTERNATIONAL
Manufacturers & Exporters
Peerkhanpur Road, Bhadohi - 221401 (U.P.)
Ph: (O) 05414-25178,25778,25779
Fax: 05414-25378 (U. P.) 0151-61256 (Bikaner)

C. H. SPINNING & WEAVING MILLS PVT. LTD.
Bothra ka Chowk, Gangasahar, Bikaner

SUDIP KUMAR SINGH DUDHORIA
Indian Silk House Agencies
129, Rasbehari Avenue
Calcutta, Ph: 464-1186

BALURGHAT TRANSPORT LTD.
170/2/C, Acharya Jagadish Bose Road
Calcutta, Ph: 284-0612-15
2, Ram Lochan Mallick Street
Calcutta - 700 073

SURANA MOTORS PVT. LTD.
24A, Shakespeare Sarani
84 Parijat, 8th Floor, Calcutta - 700 071
Ph: 2477450/5264

SAGAR MAL SURESH KUMAR
187, Rabindra Sarani
Calcutta - 700 007
Ph: Gaddy-233-1766/238-8846
Mobile: 98 3102 8566
Resi: 355-9641/7196

M/S. METROPOLITION BOOK COMPANY
93, Park Street, Calcutta - 700 016
Ph: 226-2418, Resi: 464-2783

APRAJITA BOYED
Suravee Business Services Pvt. Ltd.
9/10, Sitanath Bose Lane,
Salkia, Howrah - 711 106
Ph: 665-3666/2272
Email : Suravee @cal2. vsnl. net in
sona @ cal3. vsnl. net in

LALCHAND DHARAMCHAND
Govt. Recognised Export House
12, India Exchange Place, Calcutta - 700 001
Ph: (B) 220-2074/8958 (D) 220-0983/3187
Cable: SWADHARMI, Fax: (033) 2209755
Resi: 464-3235/1541, Fax: (033) 4640547

GRAPHITE INDIA LIMITED
Pioneers in Carbon/Graphite Industry
31, Chowranghee Road, Calcutta - 700016
Ph: 2264943, 292194, Fax: (033) 2457390

GRAPHIC PRINT & PACK
13A, Dacars Lane (Ground Floor) Calcutta - 69
Ph: 248-1533,248-0046

GLOBE TRAVELS
Contact for better & Friendlier Service
11, Ho Chi Minh Sarani, Calcutta - 700 071
Ph: 282-8181

SURENDRA SINGH BOYED
Sovna Apartment
15/1 Chakrabaria Lane
Calcutta - 700 026
Ph: 476-1533

MOTILAL BENGANI
CHARITABLE TRUST
12 India Exchange Place
Calcutta - 700 001, Ph: 220-9255

Dr. ANJULA BINAYIKA
M. D. DND, M. R. C. O. G. (London)
12, Prannath Pandit Street
Calcutta - 700 025, Ph: 474-8008

SMT. KUSUM KUMARI DOOGAR
166, Jodhpur Park, Calcutta - 700068
Ph: 4720610

विशुद्ध केशर तथा मैसूर की सुगन्धित चन्दन की लकड़ी,
वरक एवं धूप के लिये पधारें
SHRI JAIN SWETAMBER SEVA SAMITI
13, Narayan Prasad Babu Lane
Calcutta - 700 007, Ph: 239-1408

AJAY DAGA, AJAY TRADERS
203/1, M. G. Road, Calcutta - 700 007
Ph: (O) 238-9356/0950
(Fact). 557-1697/7059

BALCHAND SOHANLAL
5, Karbala Mohammed Street
Calcutta - 700 001, Ph: 953902/252759
Fax: 033-252902

SUNDERLAL DUGAR
R. D. B. Industries Ltd.
Regd. Off: Bikaner Building
8/1 Lal Bazaar Street, Calcutta - 700 001
Ph: 248-5146/6941/3350, Mobile: 9830032021
Office: Tobacco House
1/2, Old Court House Corner
Calcutta - 700 001, Ph: 220-2389/3570/3569

BHANWARLAL KARNAWAT
BEEKY TAI FEB UDYOG PVT. LTD.
City Centre, Room No. 534 & 535, 5th Floor
16, Synagauge Street, Calcutta - 700 001
Ph: 238-7281, 230-1739

KESARIA & CO.
Jute Tea Blenders & Packeteers Since 1921
2, Lal Bazar Street, Todi Chambers, 5th Floor
Calcutta - 700 001
Ph: (O) 348 8576/0669/1242
Resi: 225 5514, 237 8208, 229 1783

GYANI RAM HARAK CHAND SARAOGI
CHARITABLE TRUST
P-8 Kalakar Street, Calcutta - 700 007
Ph: 239 6205/9727

SATKAR CONSTRUCTION PVT. LTD.
Gujrat Mansion, 5th Floor
14, Bentick Street, Calcutta - 700 001
Ph: 248-4730/6256/9867, Direct: 248-6477/6169
Resi: 478-0765/458-3397, Mobile: 98300-30618
Fax: 248-6169

NAKODA METAL
Deals in all kinds of Aluminium
32A Brabourne Road
Calcutta - 700 001
Ph: 2352076, 2355701

DELUXE TRADING CORPORATION
Distinctive Printers
36, Indian Mirror Street
Calcutta - 700 013
Ph: 244-4436

R. K. KOTHARI
N. I. Corporation
Photographic, Heavy & Fine Chemicals
44c, Indian Mirror Street, Calcutta-700 013
Phone: 245-5763/64/65
D: 245-5766, Fax: 91-33-2446148

जो हिंसात्मक प्रवृति से विलग है,
वही बुद्ध, ज्ञानी हैं
WITH BEST WISHES

लाड़ा देवी ग्रन्थमाला
१२ सी, लार्ड सिन्हा रोड़
कलकत्ता - ७०० ००७

उद्देश्य

अप्रकाशित, प्राचीन, दुर्लभ, ज्ञानवर्धक एवं जनोपयोगी साहित्य प्रकाशन संवर्धन एवं संयोजन

ग्रन्थमाला से प्रकाशित पुस्तकें

श्रवण बेलगोल इतिहास के परिपेक्ष्य में
निर्माल्य ग्रहण पाप है
तीर्थ मान चित्र
भक्तामर स्तोत्र
जैन प्रश्नोत्तर माला
जैन पूजा पाठ चौबीसी पूजा संग्रह
अक्षय विधि व्रत कथा एवं पूजा
(सुहाग दशमी पूजा)
सरल जैन विवाह विधि
भव पार चलोगे
भक्तामर स्तोत्र पूजा सहित
दीपावली पूजन
तमिलनाडू के जैन तीर्थ
दिव्य ज्योति
जैन व्रत विधि एवं कथा
तत्वार्थ सूत्र
मुझे सुखी होना है
(चिन्तन के कुछ क्षण)-
पंच स्त्रोत
समाधि तंत्र

श्री राजकुमार अभिषेक कुमार सेठी
कलकत्ता

28 water supply schemes
315,000 metres of pipelines
110,000 kilowatts of puming stations
180,000 million litres of treated water
13,000 kilowatts of hydel power plants

(And in places where Columbus would have feared to tread)

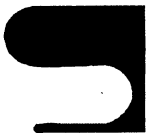

Subhash Projects and Marketing Limited

MAN IN PARTNERSHIP WITHNATURE

Head Office: 113 Part street, 3rd floor, South Block, Calcutta 700016 Ph:(033)245 7562. Registered Office: Subhash House, F-27/2 Okhla Industrial area, Phase II New Delhi 110 020 Ph: (011) 692 7091-94, Fax (011)684 6003. Regional Office:8/2 Lisoor Road, Bangalore 560 042, Ph: (080)559 5508-15, Fax: (080) 559 5580.

Laying pipelines across one of the nation s driest regions, braving temparature of 50° C.

Executing the entire water intake and water carrier system including treatment and allied civil works for the mammoth Bakreshwar Thermal Power Project.

Bulling the water supply, fire fighting and effluent disposal system with deep pump houses in the waterlogged seashore of paradip

Creating the highest head-water supply scheme in a single pumping station in the world at Lunglei in Mizoram-at 880 metres, no less.

Building a floating pumping station on the fierce Brahmaputra.

Ascending 11,000 feet in snow laden Arunachal Pradesh to create an all powerful hydro-electric plant.

Delivering the impossible, on time and perfectly is the hallmark of Subhash Projects and Marketing Limited. Add to that our credo of when you dare, then alone you do. Resulting in a string of acheivements. Under the most arduous of conditions. Fulfilling the most unlikely of dreams.

Using the most advanced technology and equipment, we are known for our innovative solution. Coupled with the financial strength to back our guarantees.

Be it engineering design. Conştruction work or construction management. Be it environmental, infrastructural, civil and power projects. The truth is we design, build, operate and maintain with equal skill. Moreover, we follow the foolproof Engineering, Procurement and Construction System. Simply put, we are a single point responsibility. A one stop shop.

So, next time, somebody şuggests that deserts by definition connote dryness, you recommend he visit us for a lesson in reality.

BOTHRA SHIPPING SERVICES

2, CLIVE GHAT STREET,
(N. C. DUTTA SARANI)
2ND FLOOR, ROOM NO. 10,
CALCUTTA - 700 001
Fax No. 220-6400
Phone: 220-7162
Email : sccbss @ cal2. vsnl. net in

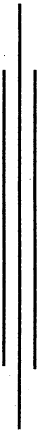

**Steams Agents, Handling Agents,
Commission Agents & Transport Contractors**

शास्त्र हिंसा एक से एक बढ़कर है।
किन्तु अशस्त्र अहिंसा से बढ़कर कोई शस्त्र नहीं।
सारांश कि अहिंसा से बढ़कर कोई साधना नहीं है।

THE GANGES MANUFACTURING COMPANY LIMITED

Chatterjee International Centre
33A, Jawaharlal Nehru Road,
6th Floor, Flat No. A-1
Calcutta - 700 071

'Gram " GANGJUTMIL"
Fax: + 91-33-245-7591
Telex: 021-2101 GANG IN

Phone: 226-0881
226-0883
226-6283
226-6953

Mill

BANSBERIA

Dist: HOOGHLY
Pin-712 502
Phone: 6346441/6446442
Fax: 6346287

भागवत पुराण के अनुसार
ऋषभदेव जैन धर्म के संस्थापक हैं।
Shri Radha Krishnan

HINDUSTAN GAS & INDUSTRIES LTD.
ESSEL MINING & INDUSTRIES LTD.
Registered Office
"Industry House"
10, Camac Street, Calcutta, 700 017
Telegram: 'Hindogen' Calcutta
Phone: (033) 242-8399/8330/5443

Manufacturers of
Engineers' Steel Files & Carbon Dioxide Gas
At Tangra (Calcutta)
Iron Ore and Manganese Ore Mines
In Orissa

S.G. Malleable & Heavy Duty Iron Castings
At Halol (Gujrat)
Ferro Vanadium and Ferro Molybdenum
At Vapi (Gujrat)
High Purity Nitrogen Gas
At Mangalore
H.D.P.E./P.P. Woven Sacks
At Jagdishpur (U.P.

जैन मत तब से प्रचलित है
जबसे संसार में सृष्टि का आरम्भ हुआ।
मुझे इसमें किसी प्रकार की आपत्ति नहीं है
कि जैन धर्म वैदान्तिक दर्शनों से पूर्व का है।

Dr. Satish Chandra
Principal Sanksrit College, Calcutta

Estd. Quality Since 1940

BHANSALI

Quality. Innovation. Reliability

BHANSALI UDYOG PVT. LTD.

(Formerly: Laxman Singh Jariwala)

Balwant Jain - Chairman

A - 42, Mayaputi, Phase-1, New Delhi-110064
Phone: 5144496,5131086,5132203
Fax: 91-011-5131184
E-mail: Laxman. jariwala @ gems. vsnl. net. in

"ऐसा विश्वास दिल में जमाते चलो
सिद्ध अरिहन्त को मन में रमाते चलो,
वक्त आयेगा ऐसा कभी न कभी
सिद्धि पायेंगे हम भी कभी न कभी।"

KUSUM CHANACHUR

Founder: Late Sikhar Chand Churoria

Our Quality Product of Chanachur.

Anusandhan, Raja,
Rimghim, Picnic,
Subham, Bhaonagari Ghantia.

Manufactured By
M/s. K. C. C. Food Product
Prop. Anil Kumar, Sunil Kumar Churoria
P. O. Azimganj, Pin-742122
Dist: Murshidabad
Phone: Code: 03483 No. : 53232
Cal. Phone: No.: 033 2300432, 5213863

With Best Compliments.....

MARSON'S LTD

MARSON'S THE ONLY TRANSFORMER MANUFACTURER IN EASTERN INDIA EQUIPPED TO MANUFACTURE 132 KV CLASS TRANSFORMERS

Serving various SEB's Power station, Defence, Coal India, CESC, Railways, Projects Industries since 1957.

Transformers type tested both for Impulse/Short Circuit test for Proven desing time and again.

PRODUCT RANGE

Manufactures of Power and Distribution Transformer From 25 KVA to 50 MVA upto 132kv level.

Current Transformer upto 66kv.

Dry type Transformer.

Unit auxiliary and stations service Transformers.

18, PALACE COURT
1, KYD STREET, CALCUTTA - 700 016
PHONE: 229-7346/4553/226-3236/4482
CABLE-ELENREP TLX-0214366 MEL-IN
FAX-00-9133-225948/2263236

JAIN BHAWAN PUBLICATIONS

P-25 Kalakar Street, Calcutta - 700 007

English:

1.	Bhagavati-sutra-Taxt edited with English translation by K. C. Lalwani in 4 volumes:		
	Vol - 1 (satakas 1-2)	Price : Rs.	150.00
	Vol - 2 (satakas 3-6)		150.00
	Vol - 3 (satakas 7-8)		150.00
	Vol -4 (satakas 9-11)		150.00
2.	James Burges - The Temples of Satrunjaya. Jain Bhawan. Calcutta; 1977. pp. x+82 with 45 plates (It is the glorification of the sacred mountain Satrunaya.}	Price : Rs.	100.00
3.	P. C. Samsukha - Essence of Jainism translated by Ganesh Lalwani.	Price : Rs.	15.00
4.	Ganesh Lalwani - Thus Sayeth Our Lord,	Price : Rs.	15.00
5.	Lalwani and S.R. Benerjee - Weber's Sacred Literature of the Jains	Price : Rs.	100.00

Hindi

6.	Ganesh Lalwani - Atimukta (2nd edn) Translated by Shrimati Rajkumar Begani	Price Rs.	40.00
7.	Ganesh Lalwani - Sraman Samskriti ki Kavita. translated by Shrimati Rajkumari Begani	Price : Rs.	20.00
8.	Ganesh Lalwani - Nilanjana translated by Shrimati Rajkumari Begani	Price : Rs.	30.00
9.	Ganesh Lalwani - Candana-Murti translated by Shrimati Rajkumari Begani.	Price: Rs.	50.00
10.	Ganesh Lalwani-Vardhaman Mahavira	Price: Rs.	60.00
11.	Ganesh Lalwani-Barsat ki Ek Rat,	Price: Rs.	45.00
12.	Ganesh Lalwani Pancadasi.	Price: Rs.	100.00
13.	Rajkumari Begani-Yado ke Aine me.	Price: Rs.	30.00

Bengali:

14.	Ganesh Lalwani-Atimukta,	Price: Rs.	40.00
15.	Ganesh Lalwani-Sraman Samskrti Kavita.	Price:Rs.	20.00
16.	Puran Chand Shyamsukha-Bhagavan Mahavir O Jaina Dharma.	Price.Rs.	15.00
17.	Satya Ranjan Bandyopadhyay-Prasnottare Jaina-dharma	Price:Rs.	20.00

मानव जीवन नश्वर हैं उसमें भी आयु तो बहुत ही परिमित है

एकमात्र मोंक्ष मार्ग ही अविचल है यह जानकर

काम भोगो से निवृत हो जाना चाहिए।

*

G.C. Jain

A-40 N.D. S.E-11
New Delhi - 110049
Tel : 625-7095/0330

WB/RNP-45
Vol. XXIV No. 2 TITTHAYARA May 2000
Registered with the Registered of Newspapers for India
under No. 30181/77

कोहो पीइं पणासेइ, माणी विणयनासणो।
माया मित्ताणि नासेइ, लोभो सव्वविणासणो।।

क्रोध प्रीति का नाश करता है,
मान विनय का नाश करता है,
माया मित्रता का नाश करंती है,
और लोभ सभी सद्‌गुणों का नाश कर देता है।

Kamal Singh Rampuria
Rampuria Mansions
17/3 Mukhram Kanoria Road, Howrah
Phone No. : 666 7212/7225